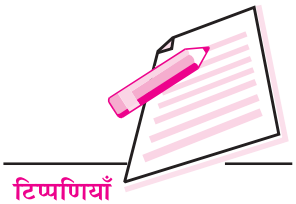

टिप्पणियाँ

6

भारतीय संस्कृति और धरोहर की समझ

भारतीय सांस्कृतिक विरासत न केवल बहुत प्राचीन संस्कृतियों में से एक है अपितु बहुत व्यापक और विविध भी है। प्राचीन से वर्तमान समय तक कई वंश और धर्म यहाँ पर आए और संस्कृति पर अपनी छाप छोड़ गए। ऐसे लोग या तो अस्थायी रूप से भारत के संपर्क में आए या फिर इसकी सीमाओं में स्थायी तौर पर बस गए और एक विलग भारतीय संस्कृति को विकसित किया। इसके परिणामस्वरूप अनेक संस्कृतियों का संश्लेषण हुआ। अपनी समृद्ध और अमूल्य सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर के फलस्वरूप भारत को विविधता और महान आश्चर्यों की भूमि के रूप में जाना गया। भारत की संस्कृति का अभिप्राय भारत के लोगों की जीवन-शैली से है। देश के अंदर संगीत, वास्तुकला, भोजन और परम्पराएँ अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग हैं। भारतीय संस्कृति को प्राय: संस्कृतियों के अनेक स्वरूप का योग कहा जाता है, जिसमें लाखों वर्ष पुरानी परम्पराएँ शामिल हैं। यह पूरे भारतीय उप-महाद्वीप में फैली हुई है। भारत की विविध संस्कृति के अनेक तत्वों ने पूरे विश्व को अच्छी तरह प्रभावित किया है। अपने समवेत रूप में इन सांस्कृतिक गुणों को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर कहा जाता है। यह जानना रोचक होगा कि दसवीं सदी में अरब के लोग भारतीय संस्कृति को अजैब-उल-हिंद कहते थे। अजैब-उल-हिंद का शाब्दिक अर्थ है 'अतुल्य भारत'।

क्या आप जानते हैं कि हमें ये परम्पराएँ और पारम्परिक जीवन शैलियाँ अपने समृद्ध अतीत से विरासत में मिली हैं। हमें जो कुछ अपने पूर्वजों से मिलता है उसे विरासत कहा जाता है। लोगों के विचार, उनकी आस्थाएँ और मूल्य, ऐतिहासिक स्मारक, अतीत की घटनाओं के प्रमुख स्थल जो ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध हैं, जैसे पानीपत की लड़ाई, हल्दी घाटी की लड़ाई इत्यादि से हमारी धरोहर का सृजन होता है। इसके अतिरिक्त हम इसमें नृत्य, संगीत शास्त्रीय संगीत कलाओं को शामिल कर सकते हैं।

प्राचीन पूर्वी सभ्यता होने के कारण भारत का इतिहास 5000 वर्ष पुराना है और इसकी संस्कृति बहुत व्यापक, गहन और अद्वितीय है। इसने विश्व की प्रगति और सभ्यता के विकास में बहुत योगदान दिया है। इस पाठ में हम भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं को समझेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- संस्कृति और विरासत के अर्थ और सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को पहचान सकेंगे;
- सांस्कृतिक पहचान, धर्म, भारतीय संस्कृति के क्षेत्र और मानवीय पक्ष की चर्चा कर सकेंगे;
- भारतीय विरासत की विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे।

6.1 संस्कृति और विरासत का अर्थ एवं अवधारणा

'कल्चर' शब्द को लैटिन भाषा के शब्द 'कल्ट अथवा कल्ट्स' से लिया गया है जिसका अर्थ मेहनत या कृषि करना, परिष्कृत करना, शुद्धिकरण और पूजा करना इत्यादि है। सारांश में इस का अर्थ किसी वस्तु को इतना शुद्ध एवं परिष्कृत करना है कि अन्तिम उत्पाद हमारे भीतर सम्मान और प्रशंसा को जगा सके।

आप क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं, कौन सी भाषा बोलते हैं, किस भगवान की पूजा करते हैं–यह सभी संस्कृति के पक्ष हैं। सरल भाषा में यह हमारे सोचने और काम करने के ढंग का मूर्त रूप है। यह वह सब चीजें है जो हमें समाज का सदस्य होने के नाते विरासत में मिली हैं। सामाजिक समूहों का सदस्य होने के नाते मानव की सारी उपलब्धियों को संस्कृति कहा जा सकता है। कला, संगीत, साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, दर्शन, धर्म और विज्ञान को संस्कृति के विभिन्न पक्षों के रूपों में देखा जा सकता है। हालाँकि संस्कृति में रीति–रिवाज, परम्पराएँ, त्योहार, जीवन शैलियाँ और जीवन के विभिन्न मुद्दों पर लोगों के दृष्टिकोण भी सम्मिलित होते हैं।

अत: संस्कृति मानव निर्मित उस वातावरण के अनुरूप है जिसमें एक पीढ़ी द्वारा सभी भौतिक और गैर भौतिक उत्पाद आगामी पीढ़ी को सौंपे जाते हैं।

हमारे जीने और सोचने के तरीकों में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति ही संस्कृति है। इसको हमारे साहित्य, धार्मिक व्यवहारों, मनोरंजन और आनंद में देखा जा सकता है। संस्कृति के दो विलग अवयव हैं जिन्हें भौतिक और गैर भौतिक कहा जाता है। भौतिक संस्कृति में ऐसी वस्तुएँ शामिल होती हैं जो हमारे जीवन के भौतिक पक्षों जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन और घरेलू चीज़ों से जुड़ी होती हैं। गैर–भौतिक संस्कृति में हमारे विचार, आदर्श, विचारधारा और विश्वास शामिल होते हैं।

संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान में तथा एक देश से दूसरे देश में बदल जाती है। इसका विकास स्थानीय, क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय संदर्भ में काम कर रही ऐतिहासिक प्रक्रियाओं पर आधारित होता है। उदाहरण के लिए हम दूसरों का स्वागत करने के तरीकों, वेशभूषा, खान–पान की आदतों, सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं और व्यवहार में पश्चिम से अलग हैं। दूसरे शब्दों मे किसी भी देश के लोगों की पहचान उनकी अपनी अलग सांस्कृतिक परम्पराओं से होती है। संस्कृति का

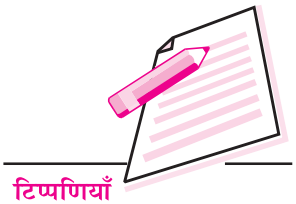

विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। हमने बुजुर्गों से बहुत कुछ सीखा है। जैसे-जेसे समय गुजरता है हम नए विचारों को पहले के विचारों में निरंतर जोड़ते रहते हैं और कभी-कभी हम अनुपयोगी समझे जाने वाले कुछ विचारों को त्याग भी देते हैं।

सांस्कृतिक विरासत में पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने पूर्वजों द्वारा मानव समाज को सौंपे गए सभी पक्ष और मूल्य शामिल होते हैं। इन सबको वे निर्बाध संजोए रखते हैं, उनकी रक्षा करते हैं और उन पर गर्व करते हैं।

विरासत की अवधारणा को स्पष्ट करने में कुछ उदाहरण सहायक होंगे। ताजमहल, गांधीनगर और दिल्ली के स्वामी नारायण मंदिर, आगरा का लाल किला, दिल्ली की कुतुब मीनार, मैसूर का महल, भीलवाड़ा (राजस्थान) का जैन मंदिर, निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, दिल्ली का शीशगंज गुरूद्वारा, सांची का स्तूप, गोवा का चर्च, इंडिया गेट इत्यादि हमारी विरासत के महत्व को दर्शाते हैं और हर प्रकार से उनकी रक्षा की जाती है।

वास्तुकला के निर्माण, स्मारकों एवं भौतिक वस्तुओं के अतिरिक्त बौद्धिक उपलब्धियाँ, दर्शन, ज्ञान के कोष, वैज्ञानिक अन्वेषण और आविष्कार भी विरासत के भाग हैं। भारतीय संदर्भ में गणित, खगोलीय और ज्योतिष के क्षेत्र में - बौद्धायन, आर्यभट्ट, भास्कराचार्य; भौतिकी के क्षेत्र में कनाड और बराहमिहिर; रसायन के क्षेत्र में नागार्जुन; औषधि के क्षेत्र में सुश्रुत और चरक और योग के क्षेत्र में पतंजलि का योगदान भारतीय सांस्कृतिक विरासत के बहुमूल्य कोष हैं। संस्कृति बदल सकती है पर विरासत नहीं। किसी एक संस्कृति अथवा समूह विशेष से संबंध रखने वाले हम लोग किसी अन्य समुदाय अथवा संस्कृति की कुछ विशेषताओं को उधार ले सकते हैं, परंतु भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के साथ हमारा अपनापन नहीं बदल सकता। हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत हमें आपस में बांधे रखेगी जैसे भारतीय साहित्य और धार्मिक ग्रंथों वेद, उपनिषद्, गीता और योग इत्यादि ने सभ्यता के विकास के पूरक के रूप में सही ज्ञान, उचित कर्म, व्यवहार और कार्यशैली प्रदान करके बहुत बड़ा योगदान दिया है।

6.2 भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

भारत के मानचित्र पर देखिए, आप पाएँगे कि भारत एक विशाल देश है जिसके भौतिक और सामाजिक परिदृश्य में अनेक प्रकार की विविधता है। हम अपने इर्द-गिर्द लोगों को भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते, भिन्न-भिन्न धर्म के लोगों को भिन्न-भिन्न अनुष्ठान करते देखते हैं। आप इन विविधताओं को उनके खान-पान की आदतों तथा वेशभूषा के स्वरूपों में भी देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त अपने देश में तथा संगीत और नृत्य के अनेक रूपों को देखिए। परंतु इन सारी विविधताओं में एकता निहित है जो सबको आपस में जोड़ती है। लोगों का धीरे-धीरे आपस में मिलना सदियों से चल रहा है। अलग-अलग जातियों, प्रजातीय वंशों और धार्मिक विश्वासों के लोग यहाँ बस गए हैं।

6.2.1 निरंतरता और परिवर्तन

प्रमुख ऐतिहासिक परिवर्तनों और उथल-पुथल के बावजूद निरंतरता के मजबूत सूत्र को पूरे भारतीय इतिहास में वर्तमान समय तक खोजा जा सकता है।

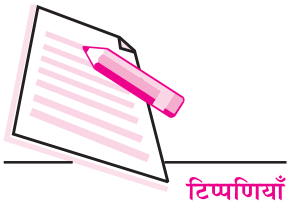

टिप्पणियाँ

भारतीय उपमहाद्वीप में 4500 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता फली-फूली और इसका मैसोपोटामिया एवं चीनी सभ्यता के साथ व्यापार भी था। पुरातत्ववेताओं के पास यह दर्शाने के लिए साक्ष्य हैं कि यहाँ हड़प्पा सभ्यता के परिपक्व होने से पहले भी संस्कृति थी। इस बात से पता चलता है कि हमारा एक लंबा इतिहास रहा है। इसके बावजूद आश्चर्य का विषय है कि आज भी भारत के किसी गांव में घर का स्वरूप हड़प्पा के घरों से बहुत अलग नहीं हैं। हड़प्पा की संस्कृति के बहुत से पहलुओं को आज भी व्यवहार में देखा जा सकता है जैसे देवी माँ और पशुपति की पूजा करना। इसी प्रकार वैदिक, बौद्ध और जैन समुदाय की अनेक परम्पराओं का आज भी पालन किया जाता है। इसने उन सब चीज़ों को नकारा है जो वर्तमान युग में प्रासंगिक नहीं रही। वैदिक धर्म में सुधार के आन्दोलनों से 600 वर्ष ईसा पूर्व जैन और बौद्ध धर्म का पदार्पण हुआ था तथा 18वीं और 19वीं सदी में धार्मिक और सामाजिक जागरूकता पैदा करना- कुछ ऐसे उदाहरण हैं। इसके कारण भारतीय सोच और व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। भारतीय संस्कृति के आधारभूत दर्शन का सूत्र निरंतर बना रहा और आज भी बना हुआ है। अतः निरंतरता और परिवर्तन की प्रक्रिया भारतीय संस्कृति की विशेषता रहे हैं। इससे हमारी संस्कृति में गतिशीलता दिखाई देती है।

6.2.2 अनेकता और एकता

विश्व की कुछ संस्कृतियों में ही भारतीय संस्कृति जैसी विविधता है। शायद आप इस बात से हैरान हों कि केरल के लोग खाना बनाने के लिए नारियल का तेल और उत्तर प्रदेश के लोग सरसों के तेल का प्रयोग क्यों करते है? यह इस कारण है कि केरल तटीय राज्य है जहाँ नारियल की पैदावार अधिक होती है तथा उत्तर प्रदेश मैदानी क्षेत्र है जो सरसों की खेती के अनुकूल है। पंजाब के भांगड़ा अथवा तमिलनाडु के पोंगल और असम के बिहू नृत्य में क्या समानता है? सभी त्यौहार फसलों की कटाई के बाद मनाए जाते हैं। क्या कभी आपने ध्यान दिया है कि हम बंगाली, तमिल, गुजराती अथवा उड़िया जैसी भिन्न भाषाएँ बोलते हैं? भारत अनेक प्रकार के नृत्यों और संगीत का घर है जिन्हें आमतौर पर शादी अथवा बच्चे के जन्म के अवसर पर प्रयोग किया जाता हैं।

हमारे देश में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं जिससे साहित्य समृद्ध हुआ है। विश्व के आठ बड़े धर्मों को मानने वाले लोग यहाँ समरसता से रहते हैं। क्या आप जानते हैं कि भारत जैन, बौद्ध, सिक्ख और निसंदेह हिंदू जैसे अनेक धर्मों का घर है। वास्तुकला मूर्तिकला तथा चित्रकला की अनेक शैलियों का यहाँ विकास हुआ है। संगीत और नृत्य की विभिन्न शैलियाँ, लोक संगीत और शास्त्रीय दोनों का यहाँ अस्तित्व है। इसी प्रकार अन्य त्यौहार और प्रथाएँ हैं। यह व्यापक विविधता भारतीय संस्कृति को संयुक्त और समृद्ध बनाने के साथ सुंदर भी बनाती हैं। हमारी संस्कृति में इतनी विविधता क्यों हैं? इसके अनेक कारण हैं। देश की विशालता और इसके भौतिक और जलवायु लक्षणों में भिन्नता इसका एक स्पष्ट कारण है।

हमारी संस्कृति में अनेकता का दूसरा महत्वपूर्ण कारण विभिन्न जातीय समूहों के बीच अंतर्मिलन है। बहुत पहले से दूर-दराज और नजदीक के लोग यहाँ आते रहे हैं और बसते रहे हैं। हम विभिन्न प्रजातीय समूहों जैसे प्रोटो आस्ट्रेलियाई (Proto-Australoids), द नीग्रो (The Negnords) और मोंगोलोएड (Mongoloids) को भारत में रहते हुए देखते हैं। विभिन्न प्रजातीय समूह जैसे इरानी,

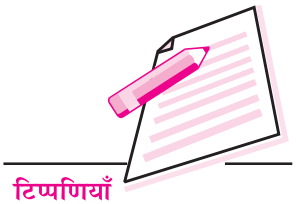

यूनानी, कुषाण, शाक्य, हूण, अरबी, तुर्की मुगल और यूरोपीय लोग भी भारत में आए, यहाँ बस गए और यहाँ के लोगों के साथ घुल-मिल गए। अन्य संस्कृतियों के लोग यहाँ अपनी सांस्कृतिक आदतों, सोच और विचारों को अपने साथ लेकर आए जो यहाँ की संस्कृति के साथ घुल-मिल गए। शर्टस, ट्रोजर्स और स्कर्टस का यहाँ नया आगमन हुआ है जिन्हें 16वीं सदी में यूरोपीय ले कर आए थे। 'रोटी' एक तुर्की शब्द है तथा 'समोसा' मध्य एशिया से आया है। भारतीय उप महाद्वीप में विवाह के समय दूल्हे द्वारा पहनी जाने वाली 'शेरवानी' मध्य एशिया के शेनवान लोगों द्वारा पहना जाने वाला परिधान है। 18वीं सदी में उत्तर भारत में मराठा लाल मिर्च ले कर आए। अत: भारत ने युगों से विभिन्न आदतों और विचारों को समाहित करने की उल्लेखनीय क्षमता का प्रदर्शन किया है। इसने हमारी संस्कृति को विविधता और समृद्धि प्रदान करने में योगदान दिया है।

बाहर की संस्कृतियों के साथ संपर्क के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच भी सांस्कृतिक आदान-प्रदान चलता रहा है। लखनऊ का चिकन का काम, पंजाब की फुलकारी कढ़ाई, बंगाल की कांथा कढाई, गुजरात के पटोला हमें एक अलग क्षेत्रीय महक का अनुभव करवाते हैं। यद्यपि भारत के दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम के केन्द्रों की अपनी विशिष्ट संस्कृतियाँ हैं। तब भी वे बिल्कुल विलग रह कर विकसित नहीं हुई हैं। भौतिक बाधाओं के बावजूद भारतीय देश के एक भाग से दूसरे भाग में व्यापार और तीर्थ यात्राओं के लिए जाते रहे हैं। विजय प्राप्त करके अथवा गठजोड़ कर के नए क्षेत्रों को जोड़ा गया। परिणामस्वरूप लोगों ने सांस्कृतिक आदतों को देश के एक भाग से दूसरे भागों में स्थानांतरित किया। फौजी अभियान भी लोगों को एक भाग से दूसरे भाग में ले गए। इसने विचारों के आदान-प्रदान में सहायता प्रदान की। इस प्रकार के संपर्कों ने भारतीय संस्कृति में 'एक जैसा होने' के भाव को विकसित किया जिसे पूरे इतिहास में बनाए रखा गया।

एकता का दूसरा कारक 'जलवायु' है। भौगोलिक विविधता और जलवायु में अंतर के बावजूद भारत में अंतर्निहित एकता अनुभव की जाती है। 'मानसून' भारतीय जलवायु के स्वरूप का एक महत्वपूर्ण घटक है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधती है। मानसून ने यह सुनिश्चित किया है कि 'कृषि' भारत के लोगों का मुख्य व्यवसाय है। दूसरी ओर भौतिक विशेषताओं में पाए जाने वाले अंतरों ने हमारे खान-पान, वेशभूषा, घरों तथा आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित किया है जिससे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थानों का गठन हुआ। फलस्वरूप इन कारकों ने लोगों की सोच और विचारधारा को प्रभावित किया। अत: भारत की भौतिक विशेषताओं और जलवायु में विभिन्नता भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में संस्कृति का विकास किया है। विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट विशेषताओं ने इन संस्कृतियों को एक पहचान प्रदान की है।

हमारी संस्कृति की संयुक्त पहचान हमारे संगीत, नृत्य, नाटक एवं कलाओं के अन्य रूपों जैसे चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला में भी प्रदर्शित होती है। अनेकता में एकता हमारे राजनीतिक संगठनों में भी दिखाई देती है। प्रारंभिक वैदिक काल में हमारा समाज पशु चारण से संबंधित था लोग चारागाहों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया करते थे। लेकिन जब इन लोगों ने खेती करना शुरू किया तो ये बसने लगे। एक स्थान पर बस जाने से सामुदायिक विकास और शहर बनने लगे जिन्हें नियमों और उपनियमों की ज़रूरत थी। इस प्रकार एक राजनीतिक संगठन का उदय हुआ। इस में सभाएँ और समितियाँ शामिल थीं जो राजनीतिक इकाईयाँ थी तथा इनके

माध्यम से लोग शासन में भाग लेते थे। समय के साथ राष्ट्र की अवधारणा प्रकट हुई तथा 'क्षेत्र पर कब्जा' शक्ति और सत्ता का नया साधन बना। कुछ स्थानों पर गणतंत्र बने। छठी शताब्दी ई. पूर्व से चौथी शताब्दी ई. पूर्व का समय भारत में महाजनपदों का युग कहलाता है। इन शाही राज्यों में राजाओं के पास अधिक शक्तियाँ थी। इनके बाद बड़े साम्राज्य भी स्थापित हुए जहाँ सम्राटों के पास सारी शक्तियाँ थीं। आपने प्राचीन सम्राटों अशोक, समुद्रगुप्त और हर्षवर्धन के बारे में सुना होगा। मुगलों ने भी भारत में बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। ब्रिटिश ने 1858 में स्वयं को भारत में स्थापित किया और भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग बन गया। 1947 में हम एक लंबे संघर्ष के बाद स्वतंत्रता को प्राप्त कर सके। आज हम संप्रभु समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणतंत्र हैं और पूरे देश में एक प्रकार की शासन व्यवस्था चल रही है।

6.2.3 धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण

आप जानते ही हैं कि हमारे देश में सोच और आदतों की बहुत विविधता है। ऐसी विविधता में किसी एक विशेष विचारधारा का प्रभुत्व संभव नहीं हैं। स्मरण करें कि भारत में हिंदू, मुस्लिम, इसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन, पारसी और यहूदी रहते हैं। संविधान भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित करता है। प्रत्येक को अपनी पसंद के धर्म को अपनाने, प्रचार करने और फैलाने की स्वतंत्रता है। राज्य का अपना कोई धर्म नहीं है और राज्य सब धर्मों को समान दर्जा देता है। धर्म के आधार पर किसी के साथ भेद-भाव नहीं किया जाता। बहुत हद तक लोगों ने एक व्यापक दृष्टिकोण बना लिया है और वे 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं।

6.2.4 सार्वभौमिकता

सह-अस्तित्व के सिद्धांत को केवल भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं तक ही सीमित नहीं रखा गया। भारत का दृष्टिकोण सार्वभौमिक रहा है और यह पूरे विश्व में शांति और समरसता के संदेश को बढ़ावा देता रहा है। भारत जातिवाद और उपनिवेशवाद के विरूद्ध सख्ती से आवाज़ उठाता रहा है। हमने विश्व में गुट बनाए जाने का भी विरोध किया है। वस्तुतः भारत गुट निरपेक्ष आंदोलन का एक संस्थापक सदस्य रहा है। भारत अन्य अल्प विकसित देशों के विकास हेतु प्रतिबद्ध है। इस प्रकार भारत अपनी जिम्मेवारी निभाता रहा है और पूरे विश्व की प्रगति में अपना योगदान देता रहा है।

यह याद रखना चाहिए कि भारतीय उपमहाद्वीप युगों से सभी राजनीतिक सीमाओं को लाँघते हुए एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में रहा है।

क्रियाकलाप 6.1

1. भारत के मानचित्र पर 'धरोहर' के रूप में प्रसिद्ध स्थलों की पहचान कीजिए।
2. प्रमुख सांस्कृतिक धरोहरों की पहचान कीजिए तथा अपने उत्तर के पक्ष में उदाहरण दीजिए। इन उदाहरणों के चित्रों को उनकी विशेषताओं सहित चिपकाइए।

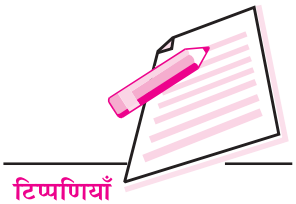

पाठगत प्रश्न 6.1

1. उस राज्य का नाम लिखिए जहाँ भांगड़ा एक लोकप्रिय नृत्य है।
2. असम के नृत्य को किस नाम से जाना जाता है?
3. कांथा कढ़ाई के लिए कौन-सा क्षेत्र प्रसिद्ध है।

6.3 सांस्कृतिक पहचान, धर्म क्षेत्र और प्रजातीयता

हमारी सांस्कृतिक पहचान विभिन्न कारकों जैसे धर्म और क्षेत्र पर आधारित है। परिणामस्वरूप प्रत्येक भारतीय की कई तरह की पहचानें हैं। किस समय कौन-सी पहचान के अन्य बिन्दुओं पर हावी होगी यह क्षेत्रों की राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। अत: प्रत्येक व्यक्ति की कुछ चीज़ें दूसरों के साथ मेल खाती हैं जबकि कुछ अन्य में काफी बड़ा अंतर हो सकता है। उदाहरण के लिए पूरे देश के दृष्टिकोण से एक ही विश्वास और आस्था के लोगों में पूजा के प्रकार और अनुष्ठानों के अतिरिक्त बहुत कम समानता हो सकती है। अनुष्ठानों और पूजा के प्रकार में भी वर्ग और क्षेत्र के अनुसार अंतर होते हैं।

लेकिन आप ऐसा भी पाएँगे कि भिन्न धर्मों और जातियों के लोगों में सामान्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशेषताएँ जैसे भाषा, भोजन, वेशभूषा, मूल्य और वैश्विक दृष्टि एक जैसी हो सकती है। बंगाल में हिंदू और मुसलमान दोनों बंगाली होने में गर्व अनुभव करते हैं। अन्य जगहों पर भी हिंदुओं, इसाईयों और मुसलमानों में क्षेत्रीय संस्कृति के बहुत से तत्व सांझे होते हैं।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. ऐसे लोगों के दो उदाहरण दीजिए जो बाहर से आकर यहाँ बस गए हों।
2. ऐसी सभ्यता का नाम लिखिए जिनके साथ हड़प्पा सभ्यता के देशों का समुद्र पार व्यापारिक संबंध रहा है।

6.4 भारतीय धरोहर की विशेषताएँ

धरोहर उसको कहते हैं जो हमें पूर्वजों से मिला है। धरोहर वह है जो किसी विशेष स्थान, क्षेत्र, धर्म अथवा देश के लिए बहुत विशिष्ट और खास होती है तो दूसरी ओर किसी परिवार, समुदाय अथवा लोगों के लिए अलग होती है। यह प्राकृतिक और व्यक्ति द्वारा निर्मित हो सकती है अथवा इतिहास के विकास के साथ विकसित हो सकती है।

भारत के गौरवशाली इतिहास ने सुनिश्चित किया है कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों के पास गर्व करने के लिए बहुत बड़ी मात्रा में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत है। देश में

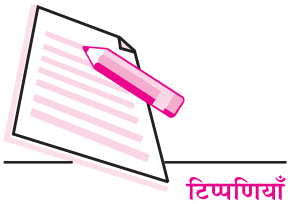

टिप्पणियाँ

चित्ताकर्षक स्मारक और धरोहर स्थल आज पर्यटकों के सामने अपने आनंद, साहस और त्याग की गाथाएँ सुनाने के लिए मौजूद हैं। सभी कहानियाँ इतनी चमत्कारिक हैं कि प्रत्येक कथन के बाद पर्यटक में और सुनने की चाह बनी रहेगी।

सदियों तक भारत में अपनी संस्कृति और परंपराओं के साथ आने वाले लोगों ने जो बाद में यहाँ की संस्कृति और परम्पराओं के साथ घुलमिल गए, एक नई धरोहर और संस्कृति को जन्म दिया। संस्कृतियों के इस मिलन ने धीरे-धीरे और लगातार भारतीयों के विश्वास और मूल्यों को और अधिक समृद्ध किया है। फलस्वरूप हिंदू, बौद्ध, इस्लाम, जैन और इसाईयत ने भारत को विश्व का सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष देश बना दिया जहाँ दीवाली, क्रिसमस, ईद और बुद्ध जयंती को समान उत्साह और रौनक के साथ मनाया जाता है।

जब हम इतिहास के पन्ने पलटते हैं तो भारत की समृद्ध धरोहर अपनी पूरी महक और रंगों के साथ जीवित हो उठती है जो अभी भी पुराने किलों, महलों, मंदिरों और स्मारकों में जीवित हैं जिन्हें इस बहुआयामी देश के प्रत्येक कोने में पाया जा सकता है। गौरवशाली वास्तुकला, बारीकी से उकेरे गए मूल मंत्र, विरासत के रूप में मिले अलंकृत स्मारकों के चेहरे हमारे हस्तशिल्पियों के कौशल की कहानी कहते हैं। जो कई सदियों तक विश्व को सम्मोहित किए रहे। भारत में आने वाले विदेशी पर्यटक भारतीय धरोहर के सभी स्थानों को नहीं देख पाते क्योंकि इनकी संख्या बहुत अधिक है।

यूनेस्को ने भारत द्वारा विश्व को दिए गए इन सुंदर उपहारों को बचाने के लिए एक मिशन अपनाया है। भले ही यह ताजमहल में संगमरमर पर की गई नक्काशी हो या खजुराहों मंदिर की मूर्तिकला या कोणार्क सूर्य मंदिर मे विज्ञान और कला का अद्‌भुत संगम। भारत के सभी धरोहर स्थान भारत की समृद्ध विरासत को अभिव्यक्त करते हैं। इनको जीवित रख कर हम अपनी भावी पीढ़ियों को एक बहुत ही समृद्ध सांस्कृतिक विरासत सौंप पाएँगे।

भारत में महत्वपूर्ण स्मारकों और स्थलों की संख्या इतनी अधिक है कि अद्‌भुत विरासत के बहुआयामी पक्षों को देखने के लिए एक यात्रा काफी नहीं है। फिर भी पर्यटकों को इससे भारतीय इतिहास और धरोहर की एक झलक देखने को मिल सकती है। अपनी यात्रा के समापन पर उनके दिल में भारतीय विरासत के प्रति निश्चित रूप से आदर का भाव पैदा होगा और वे निकट भविष्य में ऐसी और यात्राएँ करने के लिए मन बनाएँगे।

संस्कृति और धरोहर पिछली पीढ़ियों द्वारा मूर्त अथवा अमूर्त रूप में प्राकृतिक और सांस्कृतिक रूप में दी गई विरासत हैं जिसे वर्तमान में सहेज कर रखने के बाद भावी पीढ़ियों के हितार्थ सौंप दिया जाता है।

सांस्कृतिक धरोहर में मूर्त संस्कृति जैसे भवन, स्मारक, पुस्तकें, कलाकृतियाँ और शिल्प तथ्य शामिल होते हैं। अमूर्त संस्कृति भी हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण भाग है जैसे लोककथाएँ, परम्पराएँ, भाषा और ज्ञान। इसको बहुत समय तक लोगों के सृजन, कल्पना, बुद्धिमता कौशल और कलात्मक योग्यता के माध्यम से विकसित किया जाता है। प्राकृतिक धरोहर में सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण दृश्यावली और जैविक विविधता शामिल होती है। प्राकृतिक विरासत प्राकृतिक और पर्यावरणीय विशेषताओं का बहुरूपदर्शक (केलिडोस्कोप) प्रस्तुत करती है जिसमें प्राकृतिक खूबियाँ जैसे ऊँचे

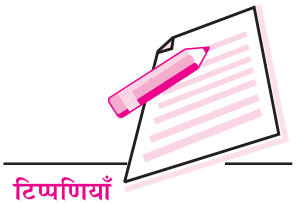

शिखर और पहाड़ियाँ, बड़ी नदियों से लेकर छोटी नदियाँ, नाले और जलधाराएँ, घने जंगल, मरूस्थल और लंबे तटीय रेखाएँ शामिल होती हैं।

भारत को कुल 166 राष्ट्रीय उद्यानों और 515 पक्षी विहारों पर गर्व है जिनमें 390 स्तनधारी, 455 सरीसृप, 210 उभयचर, 1230 पक्षी प्रजातियाँ और 30,000 कीट प्रजातियों को आरण्य प्राप्त है इनसे ये सभी वन्य जीव विरासत के उपयुक्त स्थान बन गए हैं। धरोहर (विरासत) को मुख्य रूप से निम्नलिखित ढंग से वर्गीकृत किया जाता है। इनमें भौतिक वस्तुएँ तथा स्थूल रूप की सामग्री शामिल होती हैं जैसे सिक्के, स्मारक, कला, मूर्तियाँ, मोहरें, उत्कीर्ण सामग्री। बहुत समय तक एकत्र की गई वस्तुएँ जो स्थूल रूप में हो तथा जिन्हें संग्रहालयों में देखा और छुआ जा सके।

अमूर्त धरोहर

यह जीवंत, अदृश्य और अनदेखी परंतु महसूस की जा सकने वाली धरोहर है। इसमें अनेक चीजों जैसे विचार से लेकर परम्पराएँ, जीवन-शैली, व्यवहार, विश्वास और प्रथाएँ इत्यादि शामिल होती हैं। व्यवहारिक गुण जैसे सत्य, निष्कपटता, ईमानदारी, विनम्रता किसी व्यक्ति के चरित्र निर्माण की विशेषताएँ जिन्हें महसूस तो किया जा सकता है परंतु देखा नहीं जा सकता। अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का अर्थ समुदायों, समूहों और कुछ मामलों में व्यक्तियों के साथ जुड़े ऐसे व्यवहार, प्रदर्शन, अभिव्यक्तियाँ, ज्ञान, कौशल के साथ-साथ उपकरण, वस्तुएँ, कला तथ्य और सांस्कृतिक स्थान हैं। इन्हें सांस्कृतिक विरासत का भाग माना जाता है।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (धरोहर) को अपने वातावरण के प्रत्युत्तर, प्रकृति के साथ अपनी अंत: क्रिया और अपने इतिहास के संदर्भ में समुदायों और समूहों द्वारा निरंतर निर्मित किया जाता है जो उन्हें पहचान और निरंतरता प्रदान करती है। इससे सांस्कृतिक विविधता और मानवीय सृजन के प्रति सम्मान बढ़ता है।

प्राकृतिक धरोहर

प्राकृतिक धरोहर में प्राकृतिक विशेषताएँ जैसे पर्वत, जंगल, मरुस्थल, नदियाँ, प्राणिजगत, वनस्पतियाँ, बड़े जलीय आकार जैसे समुद्र और महासागर इत्यादि शामिल होते हैं। यह मनुष्यों द्वारा निर्मित नहीं है अपितु प्रकृति के उपहार हैं जो प्रकृति के कारकों के माध्यम से अपरदन, निम्नीकरण और विलुप्तिकरण तथा संसाधनों पर लोगों के दबाव आदि को झेलते हैं।

सांस्कृतिक धरोहर

सांस्कृतिक धरोहर मानव केंद्रित है और जिसे सृजन, कल्पना, बुद्धिमता, कौशलों लोगों की कलात्मक योग्यताओं के माध्यम से लंबी कालावधि में विकसित किया जाता है।

यह धार्मिक और सामाजिक दोनों के व्यवहारों का संचित परिणाम है। इसको रीति-रिवाजों, नृत्य, संगीत, पक्की आदतों, जीवित जीवन शैलियों, भौतिक और व्यावहारिक स्वरूपों में देखा जा सकता है। यह प्राचीन से मध्य और मध्य से वर्तमान समय तक के संक्रमण काल से गुजर चुकी हैं।

क्रियाकलाप 6.2

1. अपनी स्क्रेप बुक में भारत के प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर के स्थानों के चित्र एकत्र करके चिपकाइए।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. धरोहर (विरासत) की अवधारणा को परिभाषित कीजिए।
2. विभिन्न प्रकार के धरोहरों के नाम लिखिए।
3. मूर्त और अमूर्त धरोहरों के बीच उपयुक्त उदाहरण देकर अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. उपयुक्त उदाहरणों की मदद से प्राकृतिक विरासत की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

आपने क्या सीखा

आओ अब हम कुछ सामान्य विशेषताओं की चर्चा करें जो पूरे विश्व में फैली भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में एक-सी हैं :

- **संस्कृति को सीखा और ग्रहण किया जाता है :** संस्कृति को ग्रहण करने का भाव यह है कि कुछ ऐसे व्यवहार हैं 'जिन्हें विरासत के माध्यम से ग्रहण किया जाता है। व्यक्ति कुछ गुणों को अपने माँ-बाप से ग्रहण करते हैं परंतु सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप विरासत में नहीं लिए जाते। इन्हें अपने परिवारिक सदस्यों तथा जिस समाज अथवा समूह में रहते हैं उनसे सीखा जाता है। अत: यह स्पष्ट है कि लोगों की संस्कृति उनके कार्यक्षेत्र के भौतिक और सामाजिक वातावरण से प्रभावित होती है।
- **संस्कृति लोगों के समूह द्वारा सांझा की जाती है :** किसी विचार अथवा क्रिया को संस्कृति कहा जा सकता है यदि इसको लोगों के एक समूह द्वारा सांझा किया जाता हो तथा इस पर लोगों का विश्वास तथा उनके द्वारा व्यवहार में लाया जाता हो।
- **संस्कृति संचित होती है :** संस्कृति में निहित भिन्न ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रेषित किया जा सकता है। समय गुजरने के साथ किसी विशेष संस्कृति में अधिक से अधिक ज्ञान जुड़ता जाता है। प्रत्येक जानकारी से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचने वाली समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। यह चक्र समय के साथ एक संस्कृति के रूप में रहता है।

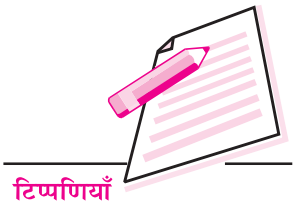

टिप्पणियाँ

- **संस्कृति बदलती रहती है :** नए सांस्कृतिक गुणों से जुड़ने से ज्ञान, विचार और परम्पराएँ खो जाती हैं। समय गुजरने के साथ किसी विशेष संस्कृति में सांस्कृतिक बदलाव होने की संभावना रहती है।
- **संस्कृति गतिशील होती है :** कोई भी संस्कृति स्थिर अवस्था में नहीं रहती। नए विचारों और नई तकनीकों के जुड़ने से संस्कृति निरंतर बदलती रहती है और समय के साथ पुराने तरीकों के बदल जाने से निरंतर बदलती रहती है।
- **संस्कृति हमें उचित व्यावहारिक स्वरूपों की एक श्रेणी प्रदान करती है:** इसमें शामिल होता है कि किसी गतिविधि को कैसे संचालित किया जाए और किस प्रकार किसी व्यक्ति को कोई कार्य करना चाहिए?
- **संस्कृति विविध होती है :** यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अनेक भाग आपस में अंत: निर्भर होते है। यद्यपि ये भाग अलग होते हैं परंतु एक दूसरे पर निर्भर होते हैं और संस्कृति को संपूर्णता प्रदान करते हैं।
- **संस्कृति आदर्शात्मक होती है :** प्राय: यह व्यवहार के आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत करती है जिस पर उस संस्कृति से संबंध रखने वाले लोगों में स्वीकृति पाने के लिए लोगों को उस आदर्श रूप का अनुकरण करना चाहिए।

पाठान्त प्रश्न

1. संस्कृति के विभिन्न अवयव कौन-से हैं?
2. वस्तुपरक और गैर-वस्तुपरक संस्कृति का अर्थ लिखिए।
3. भारतीय संस्कृति के धर्म-निरपेक्षता के गुण को परिभाषित कीजिए।
4. भारतीय संस्कृति की विलग विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए :
   (अ) भारत में सांस्कृतिक संश्लेषण
   (ब) आध्यात्मिकता
   (स) 'अपनाना' भारतीय संस्कृति की एक विशेषता
6. भारतीय संस्कृति के संदर्भ में 'अनेकता में एकता' की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
7. संस्कृति क्या है? भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं और मूल्यों की उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।
8. संस्कृति और विरासत किस प्रकार पर्यटन के केंद्रीय अवयव बनते हैं?
9. विभिन्न प्रकार के भारतीय धरोहरों के उदाहरण लेकर चर्चा कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. पंजाब
2. बिहू
3. बंगाल

6.2

1. कुषाण और मुगल
2. चीन और मेसोपोटामिया

6.3

1. इसको सीखा और ग्रहण किया जाता है। संदर्भ 6.4
2. मूर्त, अमूर्त, प्राकृतिक और सांस्कृतिक।
3. मूर्त दिखती है जैसे सिक्के, स्मारक, कला तथ्य, वास्तविक मूर्तियाँ इत्यादि। अमूर्त, दिखाई नहीं देती जैसे शैली, व्यवहार और परंपराएँ इत्यादि।
4. प्राकृतिक धरोहर जैसे पक्षी, वृक्ष, जंगल और नदियाँ इत्यादि (पढ़ें सेक्शन 6.4)